Akash Sneha

ऊँ गं गणपतये नम

शुभ लाभ

जन्मपत्रिका मेलापक

Akash

Sneha

vedmuni

www.vedmuni.com

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर–वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर–वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

Akash Sneha

Model: Manubhai-M1,MP1

SrNo: 110-120-101-1102 / 3 Date: 22/11/2020

Akash		Sneha
पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
25/12/1995	जन्म तिथि	14/02/1996
सोमवार	दिन	बुधवार
घंटे 20:30:00	जन्म समय	17:35:00 घंटे
घटी 33:16:10	जन्म समय(घटी)	26:24:14 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Pune
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	18:34:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	73:58:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:34:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:11:31	सूर्योदय	07:03:09
17:30:30	सूर्यास्त	18:33:44
23:48:10	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:18
कर्क	लग्न	कर्क
चन्द्र	लग्न लग्नाधिपति	चन्द्र
मकर	राशि	वृश्चिक
शनि	राशि–स्वामी	मंगल
धनिष्ठा	नक्षत्र	ज्येष्ठा
मंगल	नक्षत्र स्वामी	बुध
2	चरण	4
वज्र	योग	हर्षण
बव	करण	विष्टि
गी–गीत	जन्म नामाक्षर	यू–युक्ता
मकर	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ
वैश्य	वर्ण	विप्र
जलचर	वश्य	कीटक
सिंह	योनि	मृग
राक्षस	गण	राक्षस
मध्य	नाड़ी	आद्य
मार्जार	वर्ग	मृग

Akash	Sneha

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
मंगल 3वर्ष 11मा 10दि		19:10:14	कर्क	लग्न	कर्क	18:40:06	बुध 0वर्ष 10मा 27दि	
गुरु		09:32:23	धनु	सूर्य	कुंभ	01:16:27	शुक्र	
05/12/2017		29:09:07	मक	चंद्र	वृश्चि	29:17:14	12/01/2004	
05/12/2033		25:24:28	धनु	मंगल	कुंभ	05:24:45	12/01/2024	
गुरु	23/01/2020	26:50:21	धनु	बुध	मक	05:30:24	शुक्र	13/05/2007
शनि	05/08/2022	04:13:33	धनु	गुरु	धनु	15:09:02	सूर्य	13/05/2008
बुध	10/11/2024	10:57:46	मक	शुक्र	मीन	12:33:47	चन्द्र	11/01/2010
केतु	17/10/2025	25:11:35	कुंभ	शनि	कुंभ	29:46:01	मंगल	14/03/2011
शुक्र	17/06/2028	29:51:42	कन्या व	राहु व	कन्या	24:51:26	राहु	13/03/2014
सूर्य	05/04/2029	29:51:42	मीन व	केतु व	मीन	24:51:26	गुरु	11/11/2016
चन्द्र	05/08/2030	05:11:38	मक	हर्षे	मक	08:07:13	शनि	12/01/2020
मंगल	12/07/2031	00:38:36	मक	नेप	मक	02:31:18	बुध	12/11/2022
राहु	05/12/2033	07:55:44	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	09:11:20	केतु	12/01/2024

व – वक्री स – स्थिर

अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त

राहु स्पष्ट

23:48:10 चित्रपक्षीय अयनांश 23:48:18

लग्न–चलित

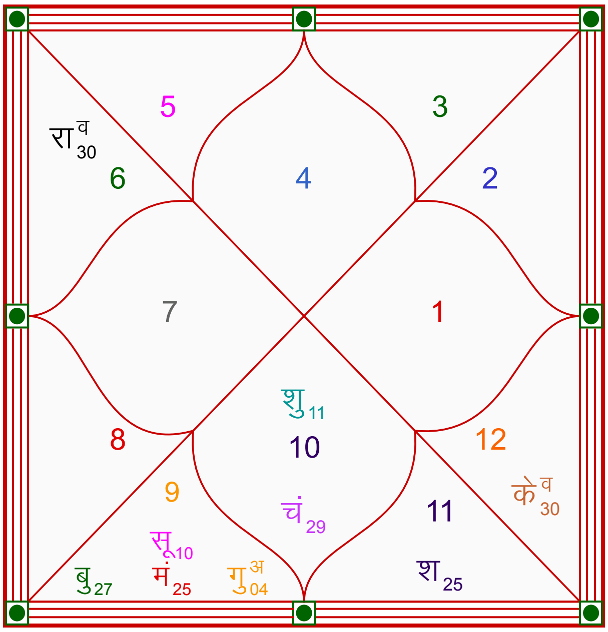

लग्न–चलित

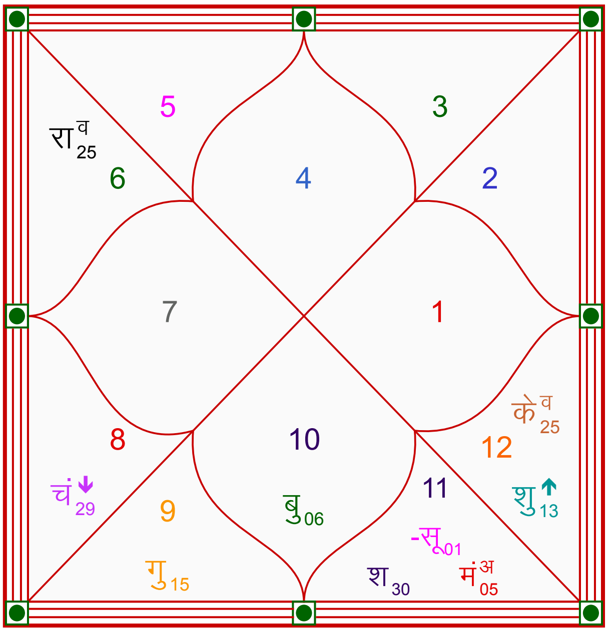

Akash

Sneha

चन्द्र कुंडली

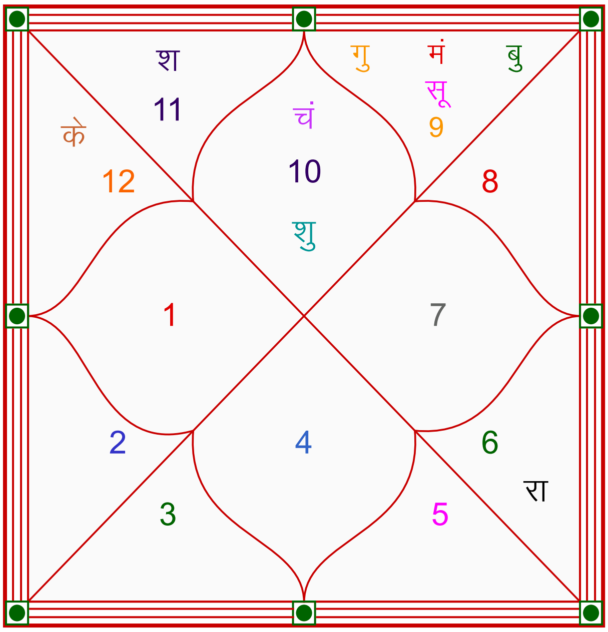

चन्द्र कुंडली

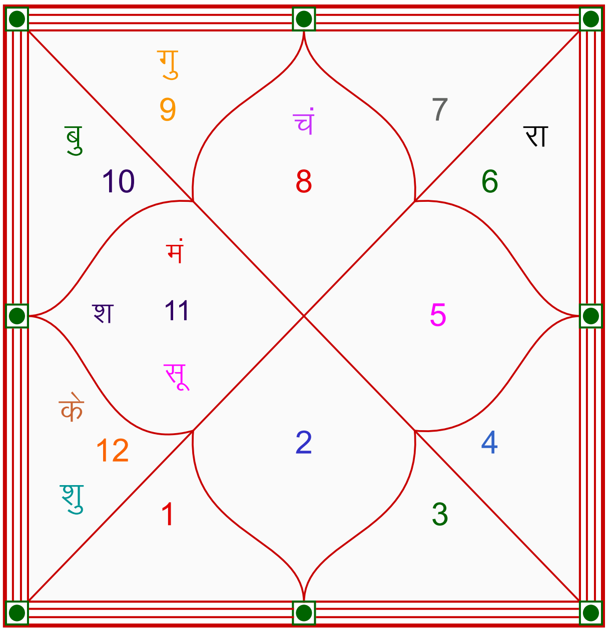

नवमांश कुंडली

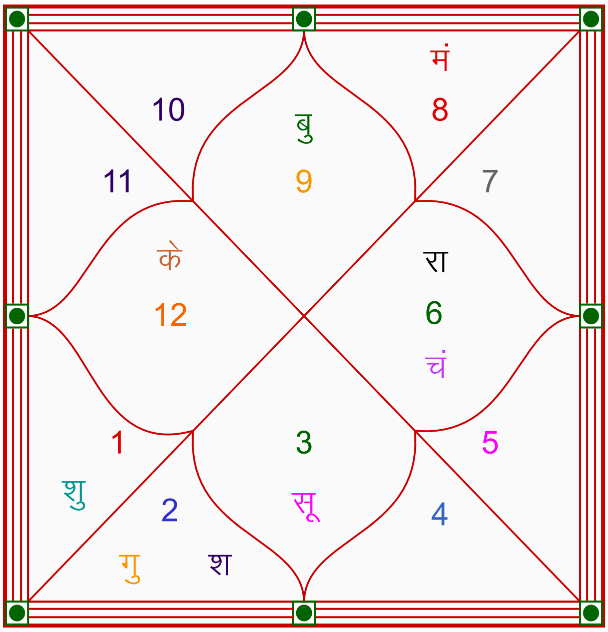

नवमांश कुंडली

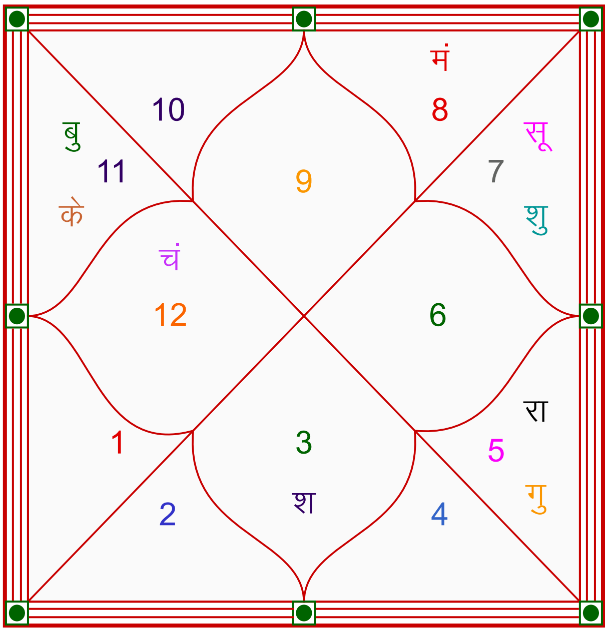

vedmuni

www.vedmuni.com

Akash	Sneha

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	विप्र	1	0.00	——	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	कीटक	2	1.00	——	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	——	भाग्य
योनि	सिंह	मृग	4	1.00	——	यौन विचार
मैत्री	शनि	मंगल	5	0.50	——	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	——	सामाजिकता
भकूट	मकर	वृश्चिक	7	7.00	——	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	——	स्वास्थ्य / संतान
कुल			**36**	**25.00**		

Akash का वर्ग मार्जार है तथा Sneha का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Akash और Sneha का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Akash मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

Sneha मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये ाटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।।

अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Sneha कि कुण्डली में अष्टम् भाव में कुम्भ राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे ादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि Akash कि कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनि ।
त्रिषट् एकादशे भौम सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु Akash कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Akash तथा Sneha में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

मेलापक फलित

स्वभाव

Akash की राशि पृथ्वीतत्व युक्त मकर तथा Sneha की राशि जलतत्व युक्त वृश्चिक राशि है। पृथ्वी एवं जलतत्व में नैसर्गिक समानता होने के कारण इनमें स्वभावगत समानता विद्यमान रहेगी तथा आपसी संबंध भी मधुर होंगे जिससे वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा। अतः यह मिलान सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा ।

Akash की राशि का स्वामी शनि तथा Sneha की राशि का स्वामी मंगल परस्पर सम तथा शत्रु राशियों में स्थित है। सुखद वैवाहिक जीवन के लिए यह ग्रहस्थिति विशेष अनुकूल नहीं है। इसके प्रभाव से दोनों के मध्य मतभेद तथा विरोध का भाव रहेगा तथा एक दूसरे के गुणों की अपेक्षा कमियों पर विशेष ध्यान देकर आपस में कटुता तथा तनाव उत्पन करेंगे। साथ ही एक दूसरे को सुख दुख में विशेष सहयोग प्रदान नहीं करेंगे जिससे वैवाहिक जीवन में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।

Akash और Sneha की राशियां परस्पर एकादश तथा तृतीय भाव में पड़ती हैं। शास्त्रानुसार यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त दुष्प्रभावों में न्यूनता आएगी तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी। साथ ही मन में एक दूसरे के प्रति प्रेम सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सहयोग देने में को तत्पर रहेंगे जिससे वैवाहिक जीवन में पूर्णतया अनुकूलता आएगी तथा जीवन में सुखद क्षणों की अनुभूति करने में समर्थ रहेंगे।

Akash का वश्य जलचर तथा Sneha का वश्य कीट है। जलचर तथा कीट में नैसर्गिक मित्रता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में समानता होगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्कताएं अनुकूल रहेंगी। फलतः कामसंबंधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ होंगे ।

Akash का वर्ण वैश्य तथा Sneha का वर्ण ब्राह्मण है। अतः Akash की प्रवृति धनार्जन संबंधी कार्यो में रहेगी तथा धन को विशेष महत्व देंगे परन्तु Sneha का ध्यान शैक्षणिक एवं धार्मिक कार्यकलपों में रहेगा।

धन

Akash और Sneha की तारा एक दूसरे के लिए सम रहेगी। अतः इसका आर्थिक स्थिति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा सामान्य रूप से धन तथा लाभ प्राप्त करने में दम्पति सफल होंगे। Akash एवं Sneha की राशि परस्पर तृतीय एवं एकादश भाव में पड़ती है। यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से Akash और Sneha की आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता तथा सम्पन्नता में वृद्धि होगी तथामंगल का प्रभाव भी शुभ ही रहेगा। अतः आय स्रोतों में वृद्धि होगी।

Akash को लाटरी या सटटे आदि के द्वारा अचानक धन की प्राप्ति हो सकती है या किसी अन्य स्रोत से एक साथ प्रचुर मात्रा में लाभ के योग बनेंगे। इस प्रकार Akash और Sneha धनऐश्वर्य से युक्त होकर अपना समय व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

स्वास्थ्य

Akash की नाड़ी मध्य तथा Sneha की नाड़ी आद्य है। अतः अलग अलग नाड़ियों में उत्पन्न होने के कारण नाड़ी दोष से ये मुक्त रहेंगे तथा इसका कोई दुष्प्रभाव इन पर नहीं पड़ेगा परन्तु मंगल की स्थिति प्रतिकूल रहेगी जिसके प्रभाव से Akash रक्त तथा पित विकार से परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही हृदय रोग संबधी परेशानी भी होगी एवं रतिक्रिया संबंधी निष्क्रियता के भाव की भी उत्पत्ति की संभावना रहेगी जिससे दाम्पत्य जीवन में कलह तथा अशांति की संभावना उत्पन्न होगी। अतः उपरोक्त अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए Akash को हनुमान जी की नियमित पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार का उपवास करना चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से Akash और Sneha का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त Akash और Sneha के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Sneha के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Sneha को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Sneha को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से Akash और Sneha सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्व वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Akash और Sneha का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल–सुश्री

Sneha के अपनी ससुराल के लोगों से संबधों में वांछित मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा सास से कुछ मतभेद रहेगा जिससे उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा तथापि यदि Sneha धैर्य एवं बुद्धिमता से कार्य लें तो सास की सहानुभूति प्राप्त हो सकती है।

ससुर देवर एवं ननदों से Sneha के संबध मधुर रहेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। ससुर की सुख सविधा एवं आराम का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा वे भी उसकी सेवा भावना से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवर एवं ननद से भी Sneha का व्यवहार मित्रता पूर्ण रहेगा तथा वे भी Sneha से प्रसन्न रहेंगे। इस प्रकार वह ससुराल के लोगों से सामंजस्य स्थापित करके आनंदानुभूति प्राप्त करेंगी।

ससुराल—श्री

Akash के सास के साथ सामान्यतया अच्छे ही संबध रहेंगे तथा उनके प्रति इनके मन में सम्मान तथा आदर का भाव सर्वदा विद्यमान रहेगा। सास को वह माता के समान समझेंगे तथा वह भी उन्हें पुत्रवत स्नेह तथा सहयोग प्रदान करेंगी । साथ ही Akash भी समय समय पर ससुराल में आते जाते रहेंगे तथा आपस में श्रेष्ठता के भाव की हमेशा न्यूनता रहेगी।

लेकिन ससुर के साथ में सामान्यतया संबधों में तनाव रहेगा तथा आयु में पर्याप्त अंतर के कारण वैचारिक मतभेद भी रहेंगे परन्तु यदि दोनों सामंजस्य की प्रवृति का अनुपालन करें तो संबधों में मधुरता का भाव आ सकता है। साथ ही साले एवं सालियों से भी Akash के संबध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर स्नेह एवं सहयोग के भाव की न्यूनता रहेगी एवं प्रतिद्वन्दिता का भाव भी विद्य मान रहेगा। इस प्रकार ससुराल पक्ष का दृष्टिकोण Akash के प्रति विशेष उल्लेखनीय नहीं रहेगा।